शराबनोशी की सज़ा

अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है;

“ऐ ईमान वालों! शराब और जुआ और बुत और पांसे नापाक ही हैं शैतानी काम, तो इनसे बचते रहना के तुम फलाह पाओ” (सूरेह माइदा #90)

अहादीस ए मुबारका में भी शराब पीने वालों के लिए अज़ाब की वईदें वारिद हुई हैं हुज़ूर नबी ए करीमﷺ ने इरशाद फ़रमाया

“हर नशे वाली चीज़ हराम है बेशक अल्लाह तआला नेअहद किया है के जो शख्स नशा पियेगा उसे طينة الخبال से पिलायेगा लोगों ने अर्ज़ की, طينةالخبالक्या चीज़ है? फ़रमाया के जहन्नमियों का पसीना या उन का निचोड़”(सही मुस्लिम)

एक हदीस शरीफ में आक़ा करीमﷺ ने इरशाद फ़रमाया

“के अल्लाह तआला फरमाता है;क़सम है मेरी इज़्ज़त की ! मेरा जो बन्दा शराब की एक घूँट भी पियेगा मैं उसको उतनी ही पीप पिलाऊंगा और जो बन्दा मेरे खौफ से उसे छोड़ देगा मैं उसको हौज़ ए कुद्स से पिलाऊंगा”(बहारे शरीअत)

टिकटोक ऐप्प एक नया फितना

जब यहूदी जैसी इस्लाम दुश्मन क़ौम ने देखा के ये मुसलमान अपने दीन में पुख्ता हैं तो उन्होंने इस क़ौम में फहाशी को डाल दिया जिसे हम लोग आज टिकटोक की सूरत में देख रहे हैं हमने भी उसे क़ुबूल करते हुए उसके गुलाम बन गए और तमाम दिन और रात गैर मेहरम औरतों को देखकर अपनी आँखों से ज़िना करते रहे, और क़ौम की बेटियां भी टिकटोक ऐप्प आकर अपनी बेहयाई का सुबूत दे रही हैं

आक़ा करीम ने इस बारे में इरशाद फ़रमाया
“के दोज़खियों की दो जमातें ऐसी होंगी जिन्हें मैंने (अपने अहदे मुबारक में) नहीं देखा एक वो क़ौम जिन के साथ गाय की दुम की तरह कोड़े होंगे जिन से लोगों कोमारेंगे और (दूसरी क़िस्म) उन औरतों की है जो पहन कर नंगी होंगी दूसरों को अपनी तरफ माइल करने वाली और माइल होने वाली होंगी उन के सर बख्ती ऊंटों की एक तरफ झुकी हुई कोहानों की तरह होंगे वो जन्नत में दाखिल न होंगीऔर न उसकी खुश्बू पाएंगी” (सही मुस्लिम)
ऐ गाफिल मुसलमान ज़रा आँख खोल कर देख किस गढ़े में औंधा हुआ जाता है और इस नपायेदार दुनिया की खातिर अपनी आख़िरत को ख़राब और बर्बाद करता है उस रब से डर जो सब पर ग़ालिब है उसका हुक्म जारी है क़ह्हार और जब्बार भी है जो बन्दों को नेक कामों पर अज्र ए अज़ीम अता करता है मगर नाफरमानी पर सख्त सजा भी देता है
ऐ गाफिल इंसान ज़रा आँख खोल और देख आख़िरत तेरे सामने है और मौत तेरी ताक में है ये ज़िन्दगी कोई दिन में साथ छोड़ देगी और वो तारीक(अँधेरी) क़ब्र तेरे इंतेज़ार में है |आज तू हयात है तौबा का दरवाज़ा खुला हुआ है उसकी बारगाह में तौबा कर और रब का मुतीअ और फरमाबरदार बन्दा बन जा |
अल्लाह तआला हम सबको तौबा की तौफ़ीक़ अता फरमाए | आमीन.............

“वो अँधेरे ही भले थे के क़दम राह पर थे
रौशनी ले आयी है मंज़िल से बहुत दूर हमें”

नौजवान तबाही के दहाने पर

अंदरपढ़ें
⬇

वैलेंटाइन डे की हक़ीक़त
ज़िना क्या है ?
शराबनोशी की सज़ा
टिकटोक ऐप्प एक नया फितना

तहरीक निज़ामे मुस्तफा

tehreeknizamemustafa@gmail.com
9837968826, 9720315389, 9675801762

आज के नौजवान को जब अल्लाह तआला जवानी जैसी अज़ीम नेमत अता करता है तो वो उसे तबाह ओ बरबाद करके रख देता है और उसे उसका ज़रा भी एहसास नहीं होता है बुराई के भंवर में ऐसा फंसा रहता है के उससे निकलना उस के लिए दुशवार हो जाता है, जबकि इस्लाम ने उम्मत ए मुस्लिमां के हर शख्स को ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा बताया है और ये भी बताया है के वो कैसे अपनी ज़िन्दगी में कामयाबी पा सकता है अल्लाह तआला का इरशाद है;

बेशक मुराद को पहुंचे ईमान वाले जो अपनी नमाज़ में गिड़गिड़ाते हैं ,और वो जो किसी बेहूदा बात की तरफ इल्तिफ़ात नहीं करते और वो के ज़कात देने का काम करते हैं और वो जो अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करते हैं(सूरेह मोमेनून #1-5)

अल्लाह तआला ने कामयाबी का दारोमदार ईमान पर रखा है लेकिन साथ साथ उन ईमान वालों की कुछ औसाफ़ बयान किये हैं जिसमे से उनकी एक निशानी ये भी बताई गयी के वो अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करते हैं लेकिन आज **वैलेंटाइन डे** के नाम पर बेहयाई करने वाले नौजवान लड़के और लड़कियों ने अपनी अस्मतों को तार तार करके रख दिया है न उन्हें कुछ अल्लाह का ख़ौफ है न अपने रसूल ﷺसे कुछ शर्म ,बेहयाई का ये हाल है के एक नौजवान लड़का एक गैर मेहरम लड़की से अपने नापाक इरादों का इज़हार करता नज़र आता है तो ज़माने की नज़रों में इसे आज रौशन ख़याली से ताबील किया जा रहा है वैलेंटाइन डे के नाम पर गुंडागिर्दी करने वालों सुनो इस्लाम में गैर मेहरम लड़की से दोस्ती करने का कोई तसव्वुर नहीं हैं ये हराम है हराम है हराम है

वैलेंटाइन डे की हक़ीक़त

क्या तुम्हे पता है वैलेंटाइन डे की हकीकत क्या है? अगर नहीं पता तो जान लो "एक पादरी जिसका नाम वैलेंटाइन था तीसरी सदी ईस्वी में रूमी बादशाह की हुकूमत में रहता था किसी नाफरमानी की वजह से पादरी को बादशाह ने जेल में डाल दिया ,पादरी और जेलर की लड़की के बीच इश्क़ हो गया लड़की ने अपना मज़हब छोड़ कर पादरी का मज़हब इख़्तियार कर लिया अब लड़की रोज़ाना एक सुर्ख गुलाब लेकर पादरी से मिलने आती थी बादशाह को जब इस चीज़ की खबर हुई तो उसने पादरी को फांसी देने का हुक्म दिया जब पादरी को अपनी फांसी की खबर हुई तो उसने अपना आखिरी वक़्त अपनी माशूका के साथ गुज़ारने का इरादा किया इसलिए उसने एक कार्ड अपनी माशूका को भेजा आखिरकार उसे 14 फरवरी को फांसी दे दी गयी इसलिए उसकी याद में ये बेग़ैरती का दिन14 **फरवरी** को मनाया जाता है

अफ़सोस जिसमे हमारे मुस्लिम नौजवान भी अपनी बेग़ैरती का मुज़ाहिरा करते हैं अल्लाह न करे ऐसा हो के कोई नौजवान लड़का या लड़की इस बेहयाई में पढ़कर अपने नापाक इरादों के लिए अपना दीन ही बदल ले और हलाक़ हो जाये क्युकी कुछ मामलें इस तरीके के आजकल देखने में आ रहे हैं वैलेंटाइन डे पर बेहयाई, गुंडागिर्दी, ज़िनाखोरी, शराबनोशी और तमाम तरह की बुराईयांआम हो जाती है आइये जानते हैं के क़ुरान और हदीस में इन बुराईयों के बारे में क्या फ़रमाया गया है

ज़िना क्या है ?

ज़िनाकारी एक ऐसा फेल है जिसकी मज़म्मत अल्लाह तआला ने क़ुरान ए मुक़द्दस में कई जगह फ़रमाई और उस फेल से दूर रहने का हुक्म दिया है दूर रहना तो क्या अल्लाह तआला ने इस फेल के क़रीब जाने से भी मना फ़रमाया है।अल्लाह तआला फरमाता है;

‘और ज़िना के क़रीब न जाओ बेशक ये बेहयाई का काम है और बुरा रास्ता है’

(सूरह बनी इस्राईल #32)

अल्लाह ने इस खब्बीस काम की सज़ा दुनिया में मुतय्यन फ़रमाई और फरमाता है;

‘ज़ानिया औरत और ज़ानी मर्द दोनों में से हर एक को एक सौ कोड़े लगाओ|’

(सूरेह नूर #2)

अल्लाह तआला ने इस फेल से बचने का हुक्म दिया और इस फेल का इर्तिक़ाब करने वालों की दुनयावी सज़ा का ज़िक्र क़ुरान में फ़रमाया मगर अफ़सोस लोगों को न फ़िक्र ए आख़िरत है और न खौफ ए खुदा और मुस्लिम नौजवान इन बयानात से यकसर बेगाना होकर इस फेल ए बद के मुर्तकिब हो रहें हैं जब के मोहसिन ए इंसानियत नबी ए करीमﷺ का फरमान ए आलीशान है के आप ने फ़रमाया;

‘आँख का ज़िना देखना है, और ज़ुबान का ज़िना कलाम करना है और नफ़्स उसकी तमन्ना और ख्वाहिश करता है और फर्ज(शर्मगाह) उसकी तस्दीक़ व तकज़ीब करता है’

(सही बुखारी)

गौर करने का मक़ाम है के नबी ए करीम ने देखने और कलाम करने को और नफ़्स की ख्वाहिश को ज़िना बताया

अल्लाह तआला क़ुरान में एक जगह इरशाद फरमाता है;

मुसलमान मर्दों को हुक्म दो के अपनी निगाहें कुछ नीची रखें (सूरेह नूर #30)

ऐ मुसलमानों ज़रा गौर करो,के रब ने इन आँखों को नीचा रखने का हुक्म दिया और नबी ए करीमﷺ ने भी ,

इसलिए क़ुरान फरमाता है;

बेशक कान और आँखे और दिल उन से हिसाब होना है(सूरह बनी इस्राईल #36)

ऐ अंजाम से गाफिल शख्स सुन

जो शख्स किसी ऐसी औरत को शहवत के साथ हाथ लगाए जो उसके लिए हलाल नहीं तो वो क़यामत के दिन इस तरह आएगा के उसका हाथ उसकी गर्दन पर बंधा होगा और अगर वो उसे बोसा देता है तो उसके होंठ आग में काटे जायेंगे, अगर ज़िना करता है तो उसकी रान क़यामत के दिन कलाम करेगी और उसके खिलाफ गवाही देगी और कहेगी के हराम काम के लिए मुझ पर सवारी की गयी,पस अल्लाह तआला उसकी तरफ गज़ब फरमाएगा तो उसके चेहरे का गोश्त गिर पड़ेगा वो झगड़ा करते हुए कहेगा मैंने ये काम नहीं किया अब उसकी ज़ुबान गवाही देगी के मेरे साथ नाजाइज़ गुफ्तगू की गयी, हाथ कहेंगे हमारे साथ हराम चीज़ को पकड़ा गया और उसकी आँखे कहेंगी हमारे साथ हराम को देखा गया उसके पाओं कहेंगे हमारे ज़रिये ये हराम काम की तरफ चल कर गया उसकी शर्मगाह कहेगी मैंने ये काम किये ,अल्लाह तआला फरमाएगा मैं मुत्तला था मगर मैंने पर्दापोशी की फिर अल्लाह तआला फरमाएगा फरिश्तों इसे पकड़कर कर मेरा अज़ाब चखाओ इस शख्स पर मेरा अज़ाब सख्त है जो मुझसे बहुत कम हया करता था इस की तस्दीक़ इस इरशाद से होती है :

जिस दिन उन के खिलाफ उन की ज़ुबानें ,हाथ और पाओं उन के आमाल की गवाही दें

(सूरेह नूर #24)